CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th Jan. 2022, Revised on 15th Feb. 2022, Accepted 19th Feb. 2022

आलेख

डिजिटल शिक्षा के परिपेक्ष्य से स्त्री शशक्तिकरण

* डॉ॰ चित्रा जितेन्द्र सिंह
Assistant Professor
L-82/A-2, Railway Colony, Moradabad, U.P.
Email: drchitrajitendrasingh@yahoo.com, Mobile: 6396591577

मुख्य शब्द – डिजिटल शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण *आदि।*

सारांश

कोरोना महामारी के बाद समग्र विश्व में कई क्षेत्रो में बहुत तेजी से बदलाव और परिवर्तन हुए। डिजिटल क्रांति से कार्यो को आभासी माध्यम से इंटरनेट प्रयोग के जरिये प्रत्यक्ष ना होते हुए भी प्रभावी तरीके से करने की दक्षता हासिल कर ली गई है। शिक्षा सभी कार्यो के बुनियादी ढांचे में रेहता है। डिजिटल युग के लिए शिक्षा और शिक्षा का नवीनीकरण करते हुए डिजिटल शिक्षा से समाज जीवन में परिवर्तन हुआ है। डिजिटल परिवर्तन से स्त्री सशक्तिकरण के कार्यो में और तेजी आई है और अपने क्षमताओ को विश्व के समक्ष रखने का होसला भी मिला और और सहयोग भी मिला है। प्रस्तुत लेख के द्वारा डिजिटल शिक्षा से स्त्री सशक्तिकरण के लिए शिक्षा का वर्तमान स्वरूप, डिजिटल शिक्षा की ताकत, स्त्री सशक्तिकरण में शिक्षा का योगदान, डिजिटल युग की शिक्षा से स्त्री सशक्तिकरण के प्रयासो जैसे बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

सामाजिक सशक्तिकरण मे प्रारम्भ और महत्वपूर्ण साधन "शिक्षा" है । शिक्षा के द्वारा और माध्यम से स्त्री परिवार में, समाज में, राज्य में, देश या विदेश में सशक्त, समाज उपयोगी अपनी स्थिति को दर्ज करा सकती है । शिक्षित महिला खुद सक्रियता से स्वावलंबी होने के साथ अपनी भावी पीढ़ी को भी लाभान्वित करती है । यह इसीलिए अवशयक है की बिना महिलाओ की हिस्सेदारी से कोई भी समाज या देश का पूर्ण विकास संभव नहीं है । समय के साथ आते परिवर्तन और विस्तृत स्वीकार्यता के साथ समझ से महिलऔ को बराबरी के अवसर प्रदान करने और स्वतंत्र्य रुचि के साथ शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति के द्वारा अपनी आकांषाओ को पूरा करने के लिए समान अवसर मिलने ही चाइए । लेकिन समाज में आज भी कुछ चुनौतियों के कारण आज भी स्त्री सशक्तिकरण के वह लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये जिसका स्वप्न देखा था । कुछ बाधाए और पुराने बेड़ियों के बंधनो से मुक्ति के लिए समाज के सभी वर्गो के समूहिक प्रयासो से यह संभव हो सकेगा । कोरोना के महामारी में जहा जीवन संकट पे प्रश्न लगा था तभी डिजिटल माध्यम के प्रभाव और स्वीकार्यता को महसूस किया गया । डिजिटल युग में शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा से शुरू करते हुए महिला सशक्तिकरण के सभी पक्षो को सार्थक करने का स्वप्न भी साकार होता प्रतीत हुआ । डिजिटल युग में डिजिटल शिक्षा से महिला साक्षारता दर बढ़ा और अपने स्वप्नों को साकार करने की दिशा में कदम भी बढ़ाया । सरकार के इसी दिशा में होते प्रयासो से भी स्त्री सशक्तिकरण को ज्यादा गति मिली । इसका परिणाम ही है की भारतीय महिलाओं ने वैश्विक पटल पर अपने कार्यो और हौंसलों के द्वारा वैश्विक प्रतिनिधित्व किया है और भविष्य मे भी यह और प्रभावी तरीके से प्रत्यक्ष हो सकेगा ।

शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

मानव, पृथ्वी पर निवास करते सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ क्यू है ? यह जानना और समझना हो तो मानव की बुद्धि के प्रयोग से निरंतर बेहतर बनने की दिशा में सुव्यवस्थित जीवन जीने की प्रणाली है । यह पूरी प्रणाली में तर्कबद्ध योजना और अवशयकताओं के साथ संघर्ष करते हुए ज्ञान के विस्तार की दिशा में खुद को आगे ले जाने का प्रयास था । ज्ञान के विस्तार एवं भविष्य को ध्यान में रखते हुए ज्ञान-प्रणाली मे शिक्षा के क्षेत्र में समय समय पर संशोधन करते हुए बाल्यावस्था से ही शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक, संवेगिक और तकनीकी विकास के अनुसार होता परिवर्तन अवशयक है । शिक्षा के माध्यम से ही समाज में अपना स्थान एवं श्रेष्ठ चरित्र-निर्माण के साथ समाजीकरण के साथ व्यक्ति वास्तविक अर्थ में मनुष्य बनता है । वर्षो से ज्ञान के क्षेत्र एवं माध्यम से आती नई पीढ़ी को मानव बनाने की दिशा में ज्ञान, परम्पराओं, मूल्यो, कर्तव्यो एवं दायित्वों, धार्मिक, वैज्ञानिक जानकारियो को हस्तांतरित किया जाता रहा है । वर्तमान समय भी परिवर्तन के दौर से गुजरते हुए शिक्षा में आधुनिकीकरण हो रहा है । इस बदलते परीद्रशय से ज्ञान प्राप्ति का मार्ग अवरुद्ध नहीं हुआ । भारतीय वांग्मय में शिक्षा से ज्ञान प्राप्ति को जीवन की पवित्र एवं श्रेष्ठतम प्रक्रिया स्वीकार किया गया है । श्री कृष्ण ने भागवत गीता के ज्ञान देते समय स्पष्ट कहा था की **"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" अर्थात विद्या के समान दूसरा नेत्र नहीं है । इससे यह स्पष्ट होता है की मानव जीवन में ज्ञान का महत्व और वर्तमान बदलते परिपेक्ष्य में भी ज्ञान का, शिक्षा का महत्व कम नहीं हुआ है । COVID-19 के महामारी के समय में शिक्षा के आदान प्रदान का और प्रत्यक्ष के स्थान पर आभासी माध्यम के द्वारा होता शिक्षण कार्य ज्ञान के साथ तकनीकी कौशल्यों को भी बढ़ावा दे रहा है । शिक्षा का वर्तमान स्वरूप "डिजिटल शिक्षा" है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक विद्यार्थी के बीच आभासी माध्यम में होते कार्य को इंटरनेट, अत्याधुनिक उपकरण, मोबाइल फोन में प्रयोग होते**

एप्लिकेशन और ऑडियो–वीडियो के माध्यम से प्रभावी एवं रुचिकर बनाया गया है। डिजिटल शिक्षा, शिक्षा का आनंददायक साधन तो है ही साथ में सीखने के प्रभावी माध्यम के तौर पर उभर रहा है। विद्यार्थीयों के संवेगात्मक तत्वो, जागरूकता, रोचकता, उत्साह और जिज्ञासा की संतुष्टि से सर्वस्वीकृत भी हो रहा है। डिजिटल लर्निंग से व्यावहारिक, अध्ययन में समय और गति की स्वतंत्र्यता, सहयोग, मूल्य, स्पर्धात्मक तैयारी एवं रोजगारी प्राप्ति के अवसर, नवाचार एवं संशोधन के क्षेत्र में प्रशिक्षित कर रहा है। एनीमेशन, गेमिफिकेशन और वीडियो निर्माण जैसे शैक्षिक पहलुओं से ज्ञान का प्रभाव दिर्धकालीन समय तक स्मृतिपटल पर अंकित रेहता है। वर्तमान शिक्षण प्रणाली में अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा की सर्वस्वीकृति प्राप्त आवश्य हुई है लेकिन साथ साथ माध्यमों के प्रभावी संचालन, प्रयोग, शारीरिक थकावट और बौद्धिक विकास के साथ मूलयात्मक विकास के लिए बहूआयामी प्रयासो की आवश्यकता रहेगी।

डिजिटल शिक्षा की ताकत

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति, समाज, देश और विश्व समृद्धि के साथ सशक्त बनता है। शिक्षा स्वयं में इतनी प्रभावी है की व्यक्ति को श्रेष्ठतम स्थान पर पहोचा सकती है। अगर शिक्षा में वर्तमान समय की आवशयकता के अनुरूप डिजिटल तकनीकी के माध्यम से समिश्रण से इसके प्रभाव को अत्यधिक बढ़ाया जा सकता है। आधुनिक उपकरण, इंटरनेट के प्रयोग, उपग्रहो एवं टेलीविझन के माध्यम से देश के कोने कोने तक शहर से ग्राम्य स्तर तक किसी भी स्थान पर रहते हुए ज्ञान प्राप्ति हो सकती है। दूरस्थ शिक्षा, स्व-पुस्तक से सीखना, वैश्विक स्तर की नवीनतम जानकारी और तुरंत ही इसकी प्राप्ति, भेदभाव से मुक्त और आर्थिक स्तर को प्रभावित किए बिना विद्यार्थियों की क्षमता के अनुरूप और सर्वांगीण विकास से डिजिटल शिक्षा की ताकत अत्यधिक बढ़ जाती है। सीखने की प्रक्रिया में समय और गति के अनुसार रुचि के साथ परिणामात्मक दिशा में ले जाती है। व्याख्यान, पाठ्यक्रम पुरानी पद्धति और पुनरावर्तन के साथ परीक्षा प्रणाली जैसे वर्तमान चुनौतियों के साथ शिक्षा में डिजिटल प्रणाली का समावेश काफी फायदेमंद साबित हो रहा है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से स्शक्तिकरण के साथ नई पीढ़ी के भविष्य को सुरक्शित करने की दिशा में अभी से ठोस कदम उढ़ाये जा रहे है। किसी भी आयु समूह के साथ किसी भी विषय और उसकी व्यापकता और देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पद्धति, प्रक्रिया और तकनिकों के साथ संबन्धित संशोधनों से विद्यार्थीयों को प्रतिभावान बनाना संभव हो सकेगा। डिजिटल शिक्षा से धार्मिक और संस्कृतिक परम्पराओं एवं राष्ट्रिय परिपेक्ष्य में ज्ञान को नई पीढ़ी तक हस्तांतरित करने में और भविष्य में तकनीकी ज्ञान से युक्त और इंटरनेट के प्रभाव से विद्यार्थी सामजस्य स्थापित कर सकेगा। विभिन्न नेटवर्क के माध्यम से किसी भी भेदभाव से मुक्त पूर्ण सेवा का वितरण, नवाचार का और प्रोध्योगिकी का विस्तार प्रभावी साबित होगा, यही डिजिटल शिक्षा के माध्यम की ताकत को प्रदर्शित करता है। राष्ट्रिय ज्ञान नेटवर्क जैसे संचार माध्यम, अनुसंधान के साथ सामाजिक सेवा के निर्माण मे सहायता प्राप्त होगी। राष्ट्रिय सूचना विज्ञान केंद्र, परमाणु अन्तरिक्ष और रक्षा के क्षेत्र में भी डिजिटल शिक्षा का प्रभाव भविष्य के लिए देश को सुरक्शित और मजबूती प्रदान करेगा। डिजिटल शिक्षा की ताकत से ही डाटा संग्रहण और सुरक्षा से सभी क्षेत्रो में देश की ताकत बढ़ेगी। डिजिटल युग में डिजिटल शिक्षा का ज्ञान और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी को इसके सही प्रयोग के लिए तैयार करके समाज और देश विश्वगुरु बनने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। डिजिटल शिक्षा की ताकत धार्मिक क्षेत्रो में भी वैश्विक फ़लक पर हमारी समृद्ध संस्कृति और वेदो, उपनिषदों के ज्ञान एवं समाज जीवन के लिए आचार विचार के सही तरीके से विश्व को जीवन जीने का सही तरीका और मार्गदर्शन करती है। देश विदेश कही भी हम संस्कृति, धर्म, आचरण और मूल्यो से भारत देश का स्थान प्रशस्त कर सकते है। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से ही

संस्कृत भाषा के प्रचार, प्रसार, और महत्व को विश्व के समक्ष रख सके है । धर्म, रक्षा, ज्ञान, व्यापार, अंतरराष्ट्रीय संबंध, मूल्य, शांति और विकास जैसे हर पक्ष के अंतर्गत डिजिटल युग में डिजिटल शिक्षा की ताकत दिनप्रतिदिन बढ़ रही है । डिजिटल शिक्षा से ज्ञानात्मक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, धार्मिक सशक्तिकरण, देशीय सशक्तिकरण, वैश्विक सशक्तिकरण, सामुदायिक सशक्तिकरण, स्त्री सशक्तिकरण से समाज के हर पक्ष को संबल मिलता है ।

स्त्री शशक्तिकरण में शिक्षा का योगदान

शिक्षा समाज के सभी पक्षो को सशक्त करने में महत्वपूर्ण योगदान निभाती है । सामाजिक या देश के विकास में समाज के किसी भी एक पक्ष का कमजोर होना अवरोध पैदा करता है । साथ ही किसी भी युग के किसी भी समाज में स्त्री का अत्यधिक महत्व और सम्मान है । स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में समय समय पर परिवर्तन होते हुए शिक्षा की अहम भूमिका रही है । सशक्तिकरण समाज में स्त्री की भूमिका और उनका दायित्व सभी पक्षो को प्रभावित करता है और मजबूती के साथ स्थिरता प्रदान करता है । शिक्षा के माध्यम से स्त्री समाज में अपना स्थान एवं भूमका के निर्वहन में श्रेष्ठ कर सकती है । वर्तमान बदलते परिपेक्ष्य में शिक्षा में डिजिटल युग के प्रारम्भ से स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में होते ज्ञानात्मक प्रयासो को तकनीकी उपकरणो से पुनः मजबूत करने का अवसर मिला है । परंतु किसी भी युग में बदलते परिपेक्ष्य के अनुरूप माध्यम बदलता है और इसके मूल में शिक्षा और ज्ञान का उद्देश्य और महत्व निरंतर से वही रहा है । स्त्री “माँ” स्वरूप बच्चों की प्रथम गुरु होती है । माता से ही बच्चो के जीवन में ज्ञान का संचार होने का प्रारम्भ होता है । स्त्री के जीवन पर्यंत विविध भूमिकाओं के निर्वहन हेतु समाज में शिक्षित होना और सशक्तिकरण होना अतिआवशयक है । ज्ञान के माध्यम से स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में मूल्य, दायित्वों, स्थिरता, समृद्धि के साथ सम्मान और भागीदारी से सभी क्षेत्रो में सशक्तिकरण हो सकता है । शिक्षा के द्वारा ही समाज को स्त्री महत्व और उनके प्रयासो और सम्मान पाने में मदद मिलती है । शिक्षा को लेके महिलाओं को जो बाधाए आ रही है उन्हे कम करने की आवशयकता है जैसे की – लैंगिक भेदभाव, पारिवारिक समस्याए, पर्दा-प्रथा, बाल विवाह, निर्धनता, सामाजिक आर्थिक पहलू, घर से विद्यालय की दूरी जैसे कई चुनौतियाँ है । सरकार के प्रयासो से शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में आ रही बाधाओं को दूर करने के लिए बालिका विद्यालय, मुफ़्त शिक्षा, कन्या विद्यालय, महिला बैंक, ग्राम्य पंचायतों में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाना, आरक्षण मे लाभ और आर्थिक मदद, लघु उद्याओग के लिए आर्थिक सहायता जैसे कई प्रयासो से समाज में महिलाओकी हिस्सीदारी बढ़ी है । इसका पूर्ण श्रेय शिक्षा को ही जाता है ।

डिजिटल युग के शिक्षा से स्त्री शशक्तिकरण के प्रयास

शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण संभव है और यदि शिक्षा के माध्यम में डिजिटल माध्यम आ जाए तो यह युग सबसे अधिक प्रभावी साबित हो सकता है । Covid – 19 महामारी से से आई समस्या ने सभी क्षेत्रो में इंटरनेट के माध्यम से और डिजिटल युग का स्वीकार एक तरह से कर लिया है । डिजिटल शिक्षा के माध्यम से वह कई चुनौतियाँ अपने आप समाप्त हो गई जो पहले थी । समय, स्थान, विषय एवं आयु या जाती का भेद किए बिना स्वतंत्र्यता से उच्च शिक्षा तक का रास्ता तय किया जा सकता है । महिलाए देश के बहार के

विश्वविद्यालयों से कई शिक्षा, रोजगार, कौशल्य संबंधी कोर्स करके अपने पैरों पर खड़ी होने लगी है । इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा स्त्री सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है और समाज में स्वीकार्यता भी बढ़ी है । डिजिटल युग में शिक्षा से ही संभव हो पाया है की महिला बैंक, महिला पोस्ट ऑफिस, महिला मेट्रो ड्राईवर, हवाई जहाज उड़ाने से लेकर लड़ाकू जहाज उड़ाने के हौसलों से स्त्री सशक्तिकरण का परिचय समाज को मिलता है । उत्तर प्रदेश के वाराणसी की रहनेवाली शिवांगी सिंह राफेल लड़ाकू विमान उड़ाने वाली पहेली महिला पाइलट थी । हर क्षेत्रो में महिलाओकी हिस्सेदारी और उनके प्रयासो की सम्मान के साथ सराहना करते है । डिजिटल युग में शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय, सामाजिक कार्य, राजनीति, धार्मिक क्रियाकलाप, नवाचार, संशोधन और विज्ञान, रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्रो में सभी जगह महिला सशक्तिकरण को डिजिटल युग में सुवर्ण अवसर मिला है । डिजिटल माध्यम से ही अपनी क्षमता और कौशल्यों को You Tube, Twitter, या अपनी एप्लिकेशन का निर्माण करके विश्व समक्ष अपनी पहोच स्वतः ही निर्माण की है ।

स्त्री सशक्तिकरण से भविष्य का भारत

शिक्षा से डिजिटल युग शिक्षा और भविष्य में इससे आगे बढ़ते हुए स्त्री सशक्तिकरण के लिए महिलाओं के द्वारा इस दिशा में समाज सशक्तिकरण के प्रयास होते देख सकते है । जिस तरह से एक नवजात शिशु के जीवन में प्रथम गुरु माता होती है जो उसे जीवन में सदेव मार्गदर्शन प्रदान करती है और सुरक्षा प्रदान करती है इसी तरह से वर्तमान समय में शिक्षित महिलाओं के देवरा समाज में स्त्री सम्मान, स्थान, हिस्सेदारी और भविष्य के अत्याधुनिक 5G से आगे डिजिटल युग के प्रतियोगिता के समय में महिला बेहतरीन कार्यो से देख और विश्व को आगे ले जा सकेंगी । महिला पूर्ण साक्षारता के लक्ष्य तक पहोच कर अपने आर्थिक और सामाजिक आकांषाओं को पूरा कर सकेंगी । भारत को वैश्विक पटल पर विश्वगुरु बनने की दिशा में महिलाओं का योगदान प्रभावी बाँके उभरेगा । वैश्विक समाज पर भारत की महिलाओं की हिस्सेदारी एवं प्रभाव विश्व स्वीकार करेगा और विश्व में महिलाओं के सम्मान और उनके आगे बढ़ने की दिशा में योगदान देने के साथ नए स्वप्न देखने के लिए प्रेरित करेगा ।

सारांश

शिक्षा से ही समाज, देश और विश्व मानवीय मूल्यो के व्यवहरु प्रयोग से समूहिक विकास कर सकता है । शिक्षा का महत्व आदि काल से मानव सभ्यता पर प्रभाव डाल रहा है और मानव सभ्यता और जीवन को बेहतर बना रहा है । सशक्त मानव समाज ही नई पीढ़ी को हौसलों के साथ जीवन मूल्यो और विकास में तालमेल स्थापित करने में मार्गदर्शन दे सकता है । स्त्री का समाज में बहुमूल्य योगदान है और एक शिक्षित महिला समाज में 100 शिक्षको के समान कार्य कर सकती है । स्त्री सशक्तिकरण से देश में कई क्षेत्रो में सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा । डिजिटल युग में शिक्षा से अवश्य ही स्त्री सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा । स्त्री सशक्तिकरण से भविष्य में अनेकों संभावानों के साथ इसका व्याप और लाभ दोनों विस्तृत होंगे ।

संदर्भ

1. Retrived from : https://www.shikshaniti.com/2020/11/digital-education-report-and-essay.html
2. Retrived from : https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/digital-education-in-india
3. Retrived from : https://www.patrika.com/special-news/digital-literacy-in-indian-women-6778105/
4. Retrived from : https://www-schoolnow-in.translate.goog/online-learning-strengths-and-weaknesses/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc
5. Retrived from : https://www.allstudyjournal.com/article/397/2-4-103-741.pdf
6. Retrived from : https://www.mycoaching.in/2019/09/nari-shiksha-or-mahila-sashaktikaran.html

**** Corresponding Author***

डॉ॰ चित्रा जितेन्द्र सिंह

Assistant Professor

L-82/A-2, Railway Colony, Moradabad, U.P.

Email: drchitrajitendrasingh@yahoo.com, Mobile: 6396591577